पाठ 2. धरा की पाती

पाठ का उद्देश्य

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों को धरती के जन्म तथा मनुष्य के कारण इसके अस्तित्व को खतरे के बारे में अवगत कराना है। मनुष्य विकास की अंधी दौड़ में प्रकृति का अनियंत्रित दोहन कर रहा है जिससे धरती पर जीवन खतरे में पड़ गया है।

पाठ का सारांश

पत्र शैली में लिखित इस पाठ में धरती माँ की वेदना को चित्रित किया गया है। धरती अपने बेटे मानव को बताती है कि वैज्ञानिकों के अनुसार मेरा जन्म पाँच खरब वर्ष पूर्व हुआ होगा। मैं आकार में लंबोतरी, ध्रुवों पर चपटी तथा विषुवत रेखा पर उभरी हुई हूँ। मैं सूर्य के चारों ओर घूमती हूँ। मेरे इसी परिभ्रमण के कारण दिन-रात बनते हैं। मेरे चारों ओर वायुमंडल तथा हरे-भरे मैदान, सागर, नदियाँ, पहाड़ और विभिन्न प्रकार के जीव हैं। लेकिन मानव बेटा तुम्हारी उपभोक्तावादी नीतियों एवं प्रदूषण के कारण मेरा साँस लेना कठिन हो गया है। अत: तुम्हें कोशिश करनी चाहिए कि मैं जीव-जगत के लिए सदैव हँसती रहूँ।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पूर्व **पहले पहल** के प्रश्न बच्चों से करवाएँ एवं पाठ के मुख्य बिंदुओं पर चर्चा करें। पाठ का स्वयं वाचन करें फिर बच्चों से एक-एक अंश पढ़वाएँ। उन्हें पत्र विधा के बारे में बताएँ। प्राचीन समय में पत्राचार किस प्रकार होता था, इससे भी अवगत करवाएँ।
बच्चों से पूछें तथा समझाएँ–

- क्या आप भी अपने मित्रों या संबंधियों को पत्र लिखते हैं? यदि 'हाँ' तो इस पाठ में आपने धरती के विषय में जो पढ़ा है उसके बारे में मित्र को पत्र लिखकर बताइए।
- हम धरती को किस प्रकार प्रदूषित कर रहे हैं?
- पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए हमें क्या-क्या करना चाहिए?
- उन्हें समझाएँ कि पर्यावरण सुरक्षा के लिए हमें अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाने चाहिए।
- क्या धरती के बिना जीवन संभव है?
- पाठ के कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।